B.A Part-1 Psy. Paper-1 study material during lockdown by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Psychology deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur)
Class date- 20.05.2020

संवेग में हाइपोथैलेमस का महत्व (Role of Hypothalamus in Emotion)

संवेग में सिर्फ स्वायत्त तंत्रिका तंत्र ही नहीं बल्कि केंद्रीय तंत्रिका तंत्र भी क्रियाशील होता है और कार्य करता है। शरीरक्रिया मनोवैज्ञानिकों ने केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में विशेषकर मस्तिष्क का महत्व इसमें काफी बतलाया है। हाइपोथैलेमस अग्रमस्तिष्क (Forebrain) का एक प्रमुख अंग है। हाइपोथैलेमस को मनोवैज्ञानिकों ने काफी महत्वपूर्ण इसलिए बतलाया है क्योंकि इसका संबंध प्राणी के संवेग तथा अभिप्रेरण से अधिक है। हाइपोथैलेमस व्यक्ति के प्रमुख जैविक अभिप्रेरक जैसे भूख, प्यास आदि को नियंत्रित करता है। यह शरीर के भीतर में एक सामान्य संतुलन बनाए रखने में भी प्रमुख भूमिका निभाता है। सामान्य रूप से कार्य करने के लिए यह आवश्यक है कि शरीर का एक खास तापक्रम हो तथा हृदय गति एवं

रक्तचाप सामान्य हो। शरीर के भीतर की इस सामान्य संतुलन की स्थिति को मनोवैज्ञानिकों ने **समस्थिति** की संज्ञा दी है। हाइपोथैलेमस इस समस्थिति को कायम रखने की कोशिश करता है। अगर किसी कारण से समस्थिति में गड़बड़ी हो जाती है, तो हाइपोथैलेमस फिर से शरीर के भीतर समस्थिति को बनाए रखने के लिए क्रियाशील हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब हमारे शरीर में अधिक गर्मी हो जाती है तो हाइपोथैलेमस जरूरत से ज्यादा अधिक गर्मी को पसीना के रूप में बाहर निकाल देता है। उसी तरह से यदि हमारे शरीर में गर्मी सामान्य स्तर से कम हो जाती है जैसे जाड़े के मौसम में प्रायः होता है, तो हाइपोथैलेमस सक्रिय हो जाता है और हमारे शरीर में कंपन शुरू हो जाता है जिसके फलस्वरूप शरीर का तापक्रम कुछ बढ़ जाता है। हाइपोथैलेमस द्वारा स्वायत्त तंत्रिका तथा अंतः स्रावी क्रियाओं का भी नियंत्रण होता है। संवेग में भी व्यक्ति के शरीर के आंतरिक एवं बाहरी क्रियाओं में परिवर्तन देखने को मिलता है, इससे भी यह स्पष्ट हो रहा है की हाइपोथैलेमस की भूमिका संवेग में काफी महत्वपूर्ण है। इसके अत्यधिक महत्व का

मुख्य कारण यह है कि सचमुच में यह sympathetic system तथा parasympathetic system दोनों पर कुछ हद तक अपना नियंत्रण रखता बनाए रखता है। मनोवैज्ञानिकों ने संवेग में हाइपोथैलेमस के महत्व को दिखलाने के लिए निम्नांकित प्रयोगात्मक सबूत प्रदान किए हैं-

- Bard (1928) ने एक ऐसा प्रयोग किया जिसमें कुछ कुत्ते तथा बिल्लियों के हाइपोथैलेमस को ऑपरेशन द्वारा काटकर निकाल दिया गया परंतु cerebral cortex को ज्यों -का -त्यों छोड़ दिया गया। दूसरी तरफ कुछ कुत्तों तथा बिल्लियों में cerebral cortex को ऑपरेशन द्वारा काटकर निकाल दिया गया तथा हाइपोथैलेमस को ज्यों-का-त्यों छोड़ दिया गया। परिणाम में देखा गया कि पहली श्रेणी के पशु (जिनका हाइपोथैलेमस निकाल दिया गया था) में कोई संवेग नहीं हुआ। जबकि दूसरी श्रेणी के पशुओं में संवेगिक अनुक्रिया होते पाई गई। इससे स्पष्ट रूप से यह साबित हो जाता है कि हाइपोथैलेमस का महत्व संवेग में काफी है।

- अगर हाइपोथैलेमस सचमुच में संवेग का मुख्य केंद्र है तो इसे उत्तेजित करने पर जीवो में भिन्न-भिन्न तरह का संवेग होना चाहिए। Yasukochi (1960), Hess (1954) तथा Brady (1960) ने कई ऐसे प्रयोग किए हैं जिनसे बिल्लियों एवं कुत्तों के हाइपोथैलेमस को इलेक्ट्रोड द्वारा हल्का बिजली प्रवाह देकर उत्तेजित किया गया और परिणाम में पाया गया कि इन पशुओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के संवेग जैसे- क्रोध, डर , आक्रमणशीलता आदि होते देखे गए। इससे साबित हो जाता है कि हाइपोथैलेमस का महत्व संवेग में काफी है।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों ने हाइपोथैलेमस के महत्व को परोक्ष रूप से दिखलाया है। इन लोगों द्वारा हाइपोथैलेमस में छोटा घाव पैदा करके जीव के संवेगात्मक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों को अध्ययन किया है। अगर हाइपोथैलेमस द्वारा संवेग नियंत्रित होता है तो ऐसी अवस्था में यानी हाइपोथैलेमस में घाव उत्पन्न कर देने पर, जीवन में संवेग नहीं होना चाहिए। Random, (1939) तथा

Wheatley (1944) ने कुत्तों तथा बिल्लियों पर कुछ प्रयोग करके यह दिखला दिया है कि यदि इनके हाइपोथैलेमस में किसी प्रकार का घाव उत्पन्न कर दिया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में पशुओं में कोई निश्चित संवेगात्मक पैटर्न नहीं देखने को मिलता है। इससे साबित हो जाता है कि हाइपोथैलेमस का महत्व संवेग में काफी है।

ऊपर वर्णन किए गए प्रयोगात्मक सबूतों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि संवेग में हाइपोथैलेमस का योगदान काफी अधिक है।